ISSN : 3048-6203 Volume -3| Issue -1| Jan - June 2026

शोध भूमि

शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका

Page No. : 32-38

भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य

डॉ0 सुधामणि

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी

गवर्नमेंट आर सी कॉलेज ऑफ कॉमर्स एंड मैनेजमेंट स्टडीज

रेस कोर्स रोड, बेंगलूर, कनार्टक

ईमेल : sudhamani905@gmail.com

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा एक व्यापक तथा समृद्ध परंपरा है, जो वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों, शास्त्रों और लोक साहित्य के माध्यम से विकसित हुई है। समाज को नैतिक, सांसतिक और बौद्धिक रूप से समृद्ध करने में भी भारतीय ज्ञान परंपरा सहायक रही है। इस ज्ञान परंपरा को संत साहित्य ने जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। कबीर, तुलसीदास, मीराबाई, रैदास, गुरु नानक, नामदेव, जैसे महान संतों ने लोकभाषा में अपनी रचनाएँ लिखि, जिससे ज्ञान केवल विद्वानों तक सीमित न रहकर साधारण जनमानस तक पहुँचा दिया।संत साहित्य ने न केवल आध्यात्मिक जागरूकता बढ़ाई अपितु सामाजिक और बौद्धिक शांति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बीजक शब्द : राजनैतिक, सामाजिक, दार्शनिक, संत महात्मा, साहित्य।

भारतीय ज्ञान परंपरा एक व्यापक तथा समृद्ध परंपरा है, जो वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों, शास्त्रों और लोक साहित्य के माध्यम से विकसित हुई है। यह परंपरा केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं रही अपितु समाज को नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से समृद्ध करने में भी सहायक रही है। इस ज्ञान परंपरा को संत साहित्य ने जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन के दौरान संत कवियों ने ज्ञान, भी और सामाजिक सुधार को ध्यान में रखकर साहित्य की रचना की। कबीर, तुलसीदास, मीराबाई,

रैदास, गुरु नानक, नामदेव, जैसे महान संतों ने लोकभाषा में अपनी रचनाए लिखि, जिससे ज्ञान केवल विद्वानों तक सीमित न रहकर साधारण जनमानस तक पहुँचा दिया। संत साहित्य ने जाति–पाति, धार्मिक पाखंड, आडम्बर और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार किया तथा में, समानता और भाईचारे का संदेश दिया। आधुनिक समय में भी संत साहित्य की शिक्षाए प्रासंगिक बनी हुई हैं। यह सहिष्णुता, सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने में महत्वपूर्ण स्थान निभाया। इस शोध पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य के योगदान का विश्लेषण किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संत साहित्य ने न केवल आध्यात्मिक जागरूकता बढ़ाई अपितु सामाजिक और बौद्धिक शांति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारतीय ज्ञान परंपरा

भारत अनेक परंपराओं और संस्कृतियों का देश है। यह ऐसा पवित्र देश है जहां धार्मिक विविधता तथा सहिष्णुता को समाज के जनता ने मान्यता देकर स्वीकार किया है। भारत देश के इतिहास में धर्म को प्रमुख स्थान दिया है। कई शताब्दियों से द्रविड परंपरा से आर्य परंपरा का एक अनोखा संबंध है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध तथा वैविध्यमय इतिहास रखती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है :

1. समग्र जीवन दृष्टिकोणः यह भौतिकता और आध्यात्मिकता का एक अनूठा समन्वय है, जो व्यक्ति को स्वस्थ मन, शरीर और आत्मा के लिए योग–ध्यान जैसी विधाओं के माध्यम से प्रेरित करती है।

2. वैज्ञानिक और व्यावहारिक आधारः प्राचीन भारतीय ज्ञान केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि खगोल विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, वास्तुकला (जैसे मंदिर निर्माण तकनीक) और कृषि जैसे व्यवहारिक विज्ञानों से समृद्ध है।

3. सतत विकास का दर्शन : यह परंपरा पर्यावरण के साथ सामंजस्य बिठाकर रहने की शिक्षा देती है, जो सतत विकास के लिए प्रासंगिक है।

4. सांस्कृतिक पहचान और मूल्य : यह हमारी भावी पीढ़ी को भारतीय मूल्यों से जोड़ती है, जिससे चरित्र निर्माण और आत्मविश्वास बढ़ता है।

5. ज्ञान का समावेशी भंडार : यह एक निरंतर चलने वाली धारा है, जो मानव कल्याण लोकहित) को केंद्र में रखती है और इसमें दर्शन, साहित्य, कला और नीति का समावेश है।

संत साहित्य

संत साहित्य (कबीर, नानक, दादू, रबिदास आदि) भारतीय संस्कृति, नैतिकता और सामाजिक सुधार का एक अमूल्य खजाना है, जो निर्गुण ब्रह्म, गुरु महिमा और मानवतावादी मूल्यों पर जोर देता है। इनके साहित्य निर्गुण काव्यधारा, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक धरोहर को समझने के लिए उपयोगी हैं। भारत में संत परंपरा 13वीं–17वीं शताब्दी के बीच विकसित एक सामाजिक–आध्यात्मिक आंदोलन था, जिसने निर्गुण भक्ति, समानता और मानवतावाद पर जोर दिया। कबीर, नानक, रविदास, मीराबाई और नामदेव जैसे संतों ने जाति प्रथा, रूढ़िवादिता और कर्मकांडों को नकारते हुए प्रेम, करुणा और प्रत्यक्ष ईश्वर (निरंकार) का संदेश दिया।

संत साहित्य से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण विचारधाराएं –

1. समाज सुधारः जाति–पाति, आडंबर और छुआछूत का विरोध।
2. निर्गुण भक्तिः निराकार ईश्वर की उपासना और प्रेम पर जोर।
3. लोकभाषा का प्रयोगः जनसाधारण की भाषा (सधुक्कड़ी) में रचना।
4. गुरु का महत्वः ज्ञान प्राप्ति में गुरु को सर्वोच्च स्थान।

संत–साहित्य को उपयोगी माना जाता है क्योंकि यह विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों को समझाने तथा लोगों को उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में प्रेरणा दी। यह संत साहित्य ग्रंथों, कविताओं, और दोहों के माध्यम से मानवता की मूलभूत मूल्यों को सीखने और समझने का माध्यम हुआ। संत साहित्य, हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानाश्रयी शाखा है, जो मध्यकालीन संतों द्वारा ईश्वर के निराकार रूप की उपासना, समाज सुधार, और समानता के संदेश के साथ रचा गया। कबीर, रैदास, दादू और नानक जैसे संतों ने लोकभाषा में जाति–पाति, धार्मिक आडंबर और रूढ़ियों का खंडन किया।

संत साहित्य के मुख्य योगदान इस प्रकार हैंः

1. सामाजिक समरसता और सुधारः संतों ने जाति, धर्म और वर्ण के आधार पर फैले हुए भेदभाव का विरोध किया। कबीर और रैदास जैसे संतों ने समानता और प्रेम का संदेश दिया।

2. सरल भक्ति मार्ग (लोक भाषा) इन्होने संस्कृत के स्थान पर जनभाषा (जैसे ब्रज, अवधी, सधुक्कड़ी) में साहित्य रचा, जिससे ज्ञान आम आदमी तक पहुँचा।

3. अध्यात्म और वैराग्यः इन्होंने ईश्वर को निर्गुण और निराकार रूप में स्वीकार किया और हर आत्मा में परमात्मा का निवास बताया।

4. नैतिक मूल्यों की स्थापनाः इन्होंने संयम, करुणा, क्षमा और परोपकार को जीवन का आधार बताया।

5. लोकगीत और संगीत (भजन): संतों की रचनाएं (भजन, कीर्तन, अभंग) भारतीय शास्त्रीय और लोक संगीत का अभिन्न अंग हैं।

6. वैचारिक क्रांतिः इन्होने रूढ़िवादी परंपराओं पर प्रहार कर स्वतंत्र चिंतन को बढ़ावा दिया।

प्रमुख संत और उनका योगदानः

1. कबीरः बाह्याडंबर और धार्मिक कट्टरता पर प्रहार।

2. तुलसीदासः रामचरितमानस के माध्यम से आदर्श जीवन मूल्यों का प्रसार।

3. गुरु नानकः एकेश्वरवाद और भाईचारे की स्थापना।

4. मीराबाईः निर्गुण–सगुण भक्ति का अनूठा संगम।

संक्षेप में, संत साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा को अधिक मानवीय, सुलभ और समावेशी बनाया। संत कवियों ने अधिकतर लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग अपने साहित्य में किया है। अलंकारों की दृष्टि से रूपक, उपमा, अनुप्रास, यमक, श्लेष का समावेश हुआ है तो छंदों की दृष्टि से दोहा, सोरठा, सवैया का अधिकतर प्रयोग इन कवियों द्वारा किया गया है। इनकी रचनाओं में संगीतात्मकता की गुण विद्यामान है।

भारतीय ज्ञान परंपरा तथा संत साहित्य का संबंध –

भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य का अटूट संबंध है। मध्यकालीन संतों (कबीर, तुलसी, मीरा, नानक) ने वेदों, उपनिषदों और योग के गूढ़ ज्ञान को लोकभाषा में सरल दोहों, भजनों और पदों के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया। यह साहित्य जाति–पाति, आडंबरों और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार करते हुए प्रेम, समानता और मानवीय मूल्यों का संदेश देता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में संत साहित्य के प्रमुख बिंदु –

अनुभूतिपरक ज्ञान की प्रधानताः संत साहित्य किताबी ज्ञान के बजाय श्स्वानुभूतिश (निजी अनुभव) को महत्व देता है। कबीर के अनुसार, ष्तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखिन की देखीष्। निर्गुण और निराकार ईश्वरः संत कवियों ने ईश्वर को निर्गुण, निराकार और कण–कण में व्याप्त (घट–घट वासी) माना है, जो मूर्तिपूजा और अवतारवाद का खंडन करता है।

सामाजिक समरसता और समानताः इस साहित्य ने जाति–पाति, ऊंच–नीच और वर्ण व्यवस्था का कड़ा विरोध कर श्मनुष्य की समानताश पर जोर दिया।

लोकभाषा का प्रयोगः संस्कृत के स्थान पर जनभाषा (सदुकड़ी, ब्रज, अवधी, पंजाबी) का उपयोग किया, जिससे ज्ञान आम जनता तक पहुँचा।

गुरु महिमा का गानः ज्ञान परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया गया है, क्योंकि गुरु ही सत्य मार्ग दिखाता है।

आडंबरों का विरोधः बाहरी दिखावा, तीर्थयात्रा, उपवास और सांप्रदायिक भेदभाव के बजाय आंतरिक शुद्धता और प्रेम पर जोर।

हठयोग और रहस्यवादः नाथ पंथ से प्रभावित होकर हठयोग, कुंडलिनी जाग्रत करने और संयमित जीवन जीने का संदेश दिया।

संत साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा को समाज के हर एक व्यक्ति तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। मध्यकालीन भारत में भक्ती आंदोलन के दौरान संत कवियों ने ज्ञान, भक्ति और सामाजिक सुधार किया। संत कवियों में अपना महत्व्पूर्ण योगदान दिया है।

निष्कर्ष :

भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य का एक अनिखा संबंध है। संत महात्माओं ने समाज को सभी दिशाओं से देखा ,परखा तथा विश्लेषण किया। वे साधारण भाषा में साहित्य की रचना करके समाज को सुधारने का प्रयास किया। मध्यकालीन संतों (कबीर, तुलसी, मीरा, नानक) ने वेदों, उपनिषदों और योग के गूढ़ ज्ञान को लोकभाषा में सरल दोहों, भजनों और पदों के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया। यह साहित्य जाति–पाति, आडंबरों और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार करते हुए प्रेम, समानता और मानवीय मूल्यों का संदेश दिया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा तथा संत साहित्य

भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य का अटूट संबंध है। मध्यकालीन संतों (कबीर, तुलसी, मीरा, नानक) ने वेदों, उपनिषदों और योग के गूढ़ ज्ञान को लोकभाषा में सरल दोहों, भजनों और पदों के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया। यह साहित्य जाति–पाति, आडंबरों और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार करते हुए प्रेम, समानता और मानवीय मूल्यों का संदेश देता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में संत साहित्य के प्रमुख बिंदु

अनुभूतिपरक ज्ञान की प्रधानताः संत साहित्य किताबी ज्ञान के बजाय श्स्वानुभूतिश (निजी अनुभव) को महत्व देता है। कबीर के अनुसार, ष्तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखिन की देखीष्। निर्गुण और निराकार ईश्वरः संत कवियों ने ईश्वर को निर्गुण, निराकार और कण–कण में व्याप्त (घट–घट वासी) माना है, जो मूर्तिपूजा और अवतारवाद का खंडन करता है।

सामाजिक समरसता और समानताः इस साहित्य ने जाति–पाति, ऊंच–नीच और वर्ण व्यवस्था का कड़ा विरोध कर श्मनुष्य की समानताश पर जोर दिया।

लोकभाषा का प्रयोगः संस्कृत के स्थान पर जनभाषा (सदुकड़ी, ब्रज, अवधी, पंजाबी) का उपयोग किया, जिससे ज्ञान आम जनता तक पहुँचा।

गुरु महिमा का गानः ज्ञान परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया गया है, क्योंकि गुरु ही सत्य मार्ग दिखाता है।

आडंबरों का विरोधः बाहरी दिखावा, तीर्थयात्रा, उपवास और सांप्रदायिक भेदभाव के बजाय आंतरिक शुद्धता और प्रेम पर जोर।

हठयोग और रहस्यवादः नाथ पंथ से प्रभावित होकर हठयोग, कुंडलिनी जाग्रत करने और संयमित जीवन जीने का संदेश दिया।

संत साहित्य ने भारतीय ग्यान परंपरा को समाज के हर एक व्यक्ति तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। मध्यकालीन भारत में भक्ती आंदोलन के दौरान संत कवियों ने ग्यान, भक्ति और सामाजिक सुधार किया। संत कवियों में अपना महत्व्पूर्ण योगदान दिया है।

निष्कर्ष : भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य का एक अनिखा संबंध है। संत महात्माओं ने समाज को सभी दिशाओं से देखा ,परखा तथा विश्लेषण किया। वे साधारण भाषा में साहित्य की रचना करके समाज को सुधारने का प्रयास किया। मध्यकालीन संतों (कबीर, तुलसी, मीरा, नानक) ने वेदों, उपनिषदों और योग के गूढ़ ज्ञान को लोकभाषा में सरल दोहों, भजनों और पदों के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया। यह साहित्य जाति–पाति, आडंबरों और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार करते हुए प्रेम, समानता और मानवीय मूल्यों का संदेश दिया है।

भारतीय ग्यान परंपरा तथा संत साहित्य

भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य का अटूट संबंध है। मध्यकालीन संतों (कबीर, तुलसी, मीरा, नानक) ने वेदों, उपनिषदों और योग के गूढ़ ज्ञान को लोकभाषा में सरल दोहों, भजनों और पदों के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया। यह साहित्य जाति–पाति, आडंबरों और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार करते हुए प्रेम, समानता और मानवीय मूल्यों का संदेश देता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में संत साहित्य के प्रमुख बिंदु

- अनुभूतिपरक ज्ञान की प्रधानताः संत साहित्य किताबी ज्ञान के बजाय श्स्वानुभूतिश (निजी अनुभव) को महत्व देता है। कबीर के अनुसार, ष्तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखिन की देखीष्। निर्गुण और निराकार ईश्वरः संत कवियों ने ईश्वर को निर्गुण,

निराकार और कण–कण में व्याप्त (घट–घट वासी) माना है, जो मूर्तिपूजा और अवतारवाद का खंडन करता है।

- सामाजिक समरसता और समानताः इस साहित्य ने जाति–पाति, ऊंच–नीच और वर्ण व्यवस्था का कड़ा विरोध कर श्मनुष्य की समानताश पर जोर दिया।
- लोकभाषा का प्रयोगः संस्कृत के स्थान पर जनभाषा (सदुकड़ी, ब्रज, अवधी, पंजाबी) का उपयोग किया, जिससे ज्ञान आम जनता तक पहुँचा।
- गुरु महिमा का गानः ज्ञान परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा स्थान दिया गया है, क्योंकि गुरु ही सत्य मार्ग दिखाता है।
- आडंबरों का विरोधः बाहरी दिखावा, तीर्थयात्रा, उपवास और सांप्रदायिक भेदभाव के बजाय आंतरिक शुद्धता और प्रेम पर जोर।
- हठयोग और रहस्यवादः नाथ पंथ से प्रभावित होकर हठयोग, कुंडलिनी जाग्रत करने और संयमित जीवन जीने का संदेश दिया।
- संत साहित्य ने भारतीय ग्यान परंपरा को समाज के हर एक व्यक्ति तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। मध्यकालीन भारत में भक्ती आंदोलन के दौरान संत कवियों ने ग्यान, भक्ति और सामाजिक सुधार किया। संत कवियों में अपना महत्व्पूर्ण योगदान दिया है।

निष्कर्ष :

भारतीय ज्ञान परंपरा और संत साहित्य का एक अनिखा संबंध है। संत महात्माओं ने समाज को सभी दिशाओं से देखा ,परखा तथा विश्लेषण किया। वे साधारण भाषा में साहित्य की रचना करके समाज को सुधारने का प्रयास किया। मध्यकालीन संतों (कबीर, तुलसी, मीरा, नानक) ने वेदों, उपनिषदों और योग के गूढ़ ज्ञान को लोकभाषा में सरल दोहों, भजनों और पदों के माध्यम से आम जनता तक पहुँचाया। यह साहित्य जाति–पाति, आडंबरों और सामाजिक विषमताओं पर प्रहार करते हुए प्रेम, समानता और मानवीय मूल्यों का संदेश दिया है।

संदर्भ सूची

संदर्भ सूची

1)